HIN3B18a_cours-12-2013-04-25-Hindi-roman

आधुनिक हिन्दी उपन्यास और बाहरी वातावरण

अगर हिन्दी उपन्यास के विकास पर गहराई से विचार किया जाए, तो यह बात साफ हो जाती है कि हिन्दी उपन्यास ने सौ साल की अवधि में वह सब कुछ किया है जो आधुनिक उपन्यास ने पिछले तीन सौ सालों में किया है।

हिन्दी उपन्यासकारों ने आधुनिक उपन्यासकारों की तरह हर क्षेत्र में नये प्रयोग किए हैं। आज हिन्दी उपन्यास की कथा-भूमि बहुत व्यापक और विविध है। संवेदना के स्तर पर हिन्दी उपन्यास ने जीवन के अपरिचित स्तरों को पाठक के सामने रखा है।

हिन्दी उपन्यास में महानगर के जीवन के अलग-अलग स्तर, ग्रामीण जीवन के संघर्ष, अवरोध और टूटते-बनते रिश्ते, नारी-जीवन की यातनाएँ तथा ऐतिहासिक-पौराणिक जीवन की पुनर्व्याख्याएँ हैं।

साथ ही आजकल के उपन्यासों में समाज के उपेक्षित वर्गों (हरिजन, जन-जातियाँ आदि) के जीवन के प्रति सच्ची संवेदना और गहरी सहानुभूति भी व्यक्त हुई हैं। इन वर्गों से आने वाले लेखक अब तीखे स्वर में सामाजिक न्याय की माँग करने लगे हैं।

हिन्दी लेखकों के माध्यम से हिन्दी-भाषी प्रान्तों के बाहर पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, कश्मीर आदि इलाकों का जीवन-यथार्थ भी हिन्दी-उपन्यास में अभिव्यक्ति पाने लगा है।

इसके अलावा अब हिन्दी-उपन्यासों में अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश का चित्रण भी होने लगा है।

- अज्ञेय के 'अपने-अपने अजनबी' का पूरा परिवेश अन्तर्राष्ट्रीय है। मोहन राकेश के 'अँधेरे बन्द कमरे' के नायक-नायिका भी यूरोप का यात्रा कर आते हैं और लेखक को इसी माध्यम से यूरोप के जीवन का चित्र अंकित करने का अवसर मिल जाता है।
- निर्मल वर्मा के प्रसिद्ध उपन्यास 'वे दिन' (1965) में द्वितीय महायुद्ध के बाद यूरोप की अभिशप्त पीढ़ी का चित्रण किया गया है।
- उषा प्रियंवदा ने 'शेष प्रश्न' में अमेरिका में रहने वाले भारतीयों की मानसिकता का चित्रण किया है।
- नासिरा शर्मा ने 'सात नदियाँ - एक समुन्दर' में ईरान के निवासियों के वर्तमान जीवन-यथार्थ का चित्रण किया है।

इस प्रकार हिन्दी उपन्यास में एक साथ आंचलिक, अन्तर्प्रान्तीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जीवन-परिवेश के चित्र उभरने लगे हैं।

स्वतंत्रता-प्राप्ति का बाद हिन्दी उपन्यासों का टेकनीक की दृष्टि से भी बहुत विकास हुआ है। आत्मकथात्मक शैली, पत्र-शैली, डायरी-शैली, रिपोर्ताज-शैली या इन सबको समन्वित करके चलने वाली शैली सभी में उपन्यास लिखे गये हैं। इनके अतिरिक्त अन्तर्जगत की गहन अनुभूतियों को बाह्य वर्जनाओं से मुक्त करके व्यक्त करने की कोशिश में निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया गया है -

चेतना-प्रवाह (courant ou flux de conscience),
पूर्वदीप्ति (flashback)
मुक्त आसंग (association libre),
स्वप्न-विश्लेषण (interprétation des rêves/ Die Traumdeutung) तथा
सम्मोहन (hypnose),
दिवास्वप्न (rêvasserie)

उपन्यास में वातावरण तैयार करने के लिए ध्वनि-चित्रों, प्रतीक-संकेतों तथा व्यंजनापूर्ण प्रयोगों का सहारा लिया गया है।

उपन्यास में वर्णित काल की दृष्टि से भी हिन्दी में कई सफल प्रयोग हुए हैं। एक दिन की घटना, एक सप्ताह की घटना या बारह घंटों की घटना को आधार बनाकर उपन्यास लिखे गए हैं। इस प्रकार के प्रयोगों को देखने से लगता है कि उपन्यास का विकास हो रहा है।

उत्तर आधुनिक (postmoderne) कहे जाने वाले उपन्यासों में जादुई यथार्थ के नये प्रयोगों ने उपन्यास की टेकनीक को दूरदर्शन की टेकनीक के निकट पहुँचा दिया है। कई हिन्दी उपन्यासों में प्रतीकों का हल्का पुट देने की भी कोशिश की गयी है।

बदीउज़्ज़मा के 'एक चूहे की मौत' में प्रतीक शैली का प्रयोग देखने को मिलता है। राही मासूम रज़ा और कृष्णा सोबती ने फिल्मी सिनेरियो (scénario) शिल्प का प्रयोग किया है।

ऐसे प्रयोगों को देखने से लगता है कि टेकनीक की दृष्टि से हिन्दी उपन्यास में बहुत नई संभावनाएँ हैं।

हालाँकि यह सही है कि टेकनीक और शिल्प का मोह जीवन-दर्शन के ठहराव या दिशाहीनता का सूचक है, लेकिन ऐसी स्थिति का जन्म होना आज की नियति है।

हिन्दी उपन्यासों पर कुछ आरोप लगाये जाते हैं।

- पहला आरोप यह है कि अब संघर्षशील सशक्त कथानायकों की सृष्टि नहीं होती। लेकिन इसका कारण है निश्चित आस्था और स्पष्ट जीवन-दर्शन का अभाव।
- दूसरा आरोप यह है कि नये हिन्दी-उपन्यासों में उस व्यापक मानवीय संवेदना का अभाव है जो प्रेमचन्द के उपन्यासों में मिलती है। इसका कारण यह है कि आज का उपन्यासकार संश्लिष्ट चरित्रों की सृष्टि में लगा है। ऐसे चरित्र जिनमें दोहरे-तिहरे व्यक्तित्व हैं। ऐसी स्थिति में सहज मानवीयता वाले चरित्रों को जगह नहीं मिल पाती।

हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द का गोदान, जैनेन्द्र का 'त्यागपत्र', अज्ञेय का 'शेखर – एक जीवनी', उपेन्द्रनाथ अश्क का 'गिरती दीवारें', यशपाल का 'झूठा सच', फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आँचल', अमृतलाल नागर का 'बूँद और समुद्र', मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी', श्रीलाल शुक्ल का 'रागदरबारी' तथा मंजूर एहतेशाम का 'सूखा बरगद', विनोद कुमार शुक्ल का 'नौकर की कमीज', चित्रा मुद्गल का 'आँवा' आदि बहुत सफल उपन्यास हैं।